आभार ज्ञापन

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसके हर कार्य में कुछ विशिष्टजनों का सहयोग अवश्य रहता है। प्रस्तुत शोध–प्रबंध को सम्पूर्णता तक पहुँचाने में कई श्रद्धेयजन, मित्रों तथा सहयोगियों का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से हाथ रहा है जिसके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध विषय–चयन से लेकर परिसमाप्ति तक परम आदरणीय डॉ० गुरमीत सिंह के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। इनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन और असीम स्नेह के बिना यह कार्य सम्पूर्ण नहीं हो सकता था। इन्होंने अत्यधिक व्यस्तता व मेरी सैंकड़ों गलतियों को अनदेखा करते हुए शोध कार्य में निरन्तर मेरा मार्ग प्रशस्त किया। समाज, साहित्य और विचारधारा के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान को समझने का जो विवेक मैंने अपने श्रद्धेय गुरुवर से मिला है, वह अप्रतिम है। उनकी अनुकम्पा से ही मैं इस नए व चहेते तथा ज्वलन्त विषय पर कार्य करने में समर्थ हो सकी हूँ। अतः मैं हृदय से उनकी आभारी हूँ।

मैं हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के सभी आदर व सत्कार के योग्य गुरूजनों व कर्मचारियों से मिले प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ जिनसे अपार अपेक्षित स्नेह मिला।

जीवन की विषम परिस्थितियों को अनुकूलता प्रदान करते हुए, मेरे शोध कार्य को पूर्णता तक पहुँचाने वाले पूजनीय माता–पिता के सामने मैं श्रद्धा से नतमस्तक हूँ जिन्होंने मुझे सीमित साधनों के होते हुए व घरेलू कार्यो से मुक्त कर शिक्षा के इस मुकाम तक पहुँचाया।

शोध कार्य के इस अनुष्ठान में मेरे जीजा जी, बहन–भाइयों तथा अन्य परिवारजनों के अपार स्नेह व शुभकामनाओं की बौछारें भी मुझे शोध कार्य में प्रवृत्त करती रही। इसलिए मैं उनकी हमेशा कृतज्ञ रहूँगी। इस शुभ अवसर पर मैं उनके सफल भविष्य की कामना करती हूँ।

शोध प्रबंध की प्रस्तुति के अवसर पर मैं अपने जीवन साथी और फूल सी प्यारी बच्ची के प्रति आभार प्रकट न करूँ तो यह मेरी कृतघ्नता होगी। इन्होंने अपनी असुविधाओं का ध्यान न रखते हुए मुझे अध्ययन के लिए उचित वातावरण प्रदान किया। बेटी ने प्यारी मुस्कान देते हुए मौन भाव से परिस्थितियों को सहर्ष स्वीकार कर मुझे यह पुनीत कार्य करने के लिए सम्बल दिया। आदर और सम्मान के योग्य सास, ससुर व परिवार के अन्य सदस्यों के स्नेहयुक्त व्यवहार व आशीर्वाद से भी शोध प्रबंध लेखन के दौरान मुझे प्रोत्साहन मिलता रहा है। इन सबका आभार प्रकट करना मैं अपना मधुर कर्त्तव्य समझती हूँ।

शोध–प्रबंध की इस कठिन साधना में मित्रगण के सहयोग को विस्मृत नहीं जा सकता है जिन्होंने विचार–विमर्श के माध्यम से शोध प्रबंध को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से अमूल्य विचार देकर मुझे कृतार्थ किया।

अंत में उन सभी पुस्तकालयों, विद्वानों तथा उन कृतियों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिनका भरपूर लाभ उठाकर मैंने अपना शोध– प्रबंध पूर्ण किया। साथ ही धन्यवाद देती हूँ उन दलित साहित्यकारों व चिंतकों का जिन्होंने शोध–प्रबंध के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाई और अपने साक्षात्कारों के माध्यम से शोध प्रबन्ध की गुणवत्ता को बढ़ाया।

अंत में मैं अपना शोध–प्रबंध अत्यन्त विनम्र भाव से विद्वजनों व समीक्षकों के समक्ष मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत कर रही हूँ। शोध–प्रबंध की टंकण सम्बन्धी त्रुटियों को यथासंभव दूर करने का प्रयास किया है, फिर भी कुछ कमी रह गई हो तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

विनीत

दिनांक 8.7.2013

सन्तोष रानी

(सन्तोष रानी)

भूमिका

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है। साहित्य समाज के प्राँगण में साँस लेता है। साहित्य समाज का विचारप्रणेता व मागदर्शक होता है। ये सारी उक्तियाँ एवम् विश्लेषण विद्यार्थी जीवन से सुनते आ रहे हैं लेकिन इसकी सर्वांग उपयोगिता एवम् वास्तविक महत्ता व क्षमता का ज्ञान हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि ग्रहण करने के बाद ही हुआ। वैसे तो मेरी रूचि साहित्य की हर धारा के प्रति रही है लेकिन दलित समाज से सम्बंधित होने के कारण दलित साहित्य की धारा ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। दलित साहित्य के अनुभूति संसार ने मेरे अन्तर्मन को झकझोर दिया। एम० फिल्० (हिन्दी) के लघु शोध प्रबंध के अध्ययन के दौरान मैंने दलित साहित्य को पढ़ा और बाद में यह मेरी रूचि का विषय बन गया। इस अवधि में दलित साहित्य व समाज सम्बंधी विभिन्न प्रश्न मेरे मन में द्वन्द्व पैदा करते रहे।

जब मुझे पी–एच० डी० की उपाधि हेतु शोध कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ तो मैंने अपनी रूचि और जिज्ञासा को अपने शोध निर्देशक डॉ० गुरमीत सिंह के समक्ष रखा और उन्होंने मुझे **'हिन्दी दलित साहित्य के परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकारों का विवेचन (1980 के बाद)'** विषय पर शोध कार्य करने की सहर्ष सहमति व अनुमति प्रदान की।

21वीं सदी विभिन्न साहित्यिक विमर्शों के दौरे से गुजर रही है जिसमें 'दलित विमर्श' ने अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। यह अत्यन्त ज्वलन्त व चिन्तनीय विषय है जो वर्तमान में देश–विदेशों तक फैल चुका है। इस विमर्श को गति देने के लिए आज दलित साहित्यकारों की एक पूरी पीढ़ी हमारे समक्ष मौजूद है। सदियों की वर्णव्यवस्था पर आधारित सामाजिक संरचना को नकारते हुए दलित साहित्य परम्परावादी

साहित्य के समक्ष चुनौती बनकर उभरा है। समाज की प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने के लिए संघर्ष करते हुए आज दलित समाज अपने लिए अलग से मानवाधिकारों की माँग कर रहा है। ऐसे विसंगतिपूर्ण व विडम्बनापूर्ण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक व शैक्षणिक परिस्थितियों में दलित साहित्य का मानवाधिकारों के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन व मूल्यांकन प्रासांगिक है।

अध्ययन में सुविधा की दृष्टि से शोध प्रबन्ध को आठ अध्यायों में विभाजित किया है। जिसमें प्रथम अध्याय 'प्रतिपाद्य विषय का स्वरूप' के अन्तर्गत विषय प्रवेश, सम्बंध साहित्य का सर्वेक्षण, विषय परिसीमन तथा विषय का महत्त्व आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय 'दलित साहित्यः सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य' में 'दलित' शब्द के अर्थ, स्वरूप व परिभाषाओं को स्पष्ट करते हुए 'दलित' को विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक संदर्भों में जाँचा–परखा गया है। इसके बाद 'दलित साहित्य' के स्वरूप व परिभाषाओं का अध्ययन किया गया है। जिसके अन्तर्गत दलित साहित्य सम्बंधी विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। विभिन्न दलित आन्दोलनों व दलित साहित्य की वैचारिक व दार्शनिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ इसके आधार–स्त्रोतों को भी इसी अध्याय में अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

तृतीय अध्याय 'मानवाधिकार : सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य' के अन्तर्गत मानवाधिकारों का अर्थ, परिभाषा, अवधारणा, वर्गीकरण व ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। मानवाधिकारों को अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर प्रस्तुत करते हुए, इनको भारतीय संवैधानिक व्यवस्था में समझने का प्रयास किया गया है। मानवाधिकार सम्बंधी विभिन्न आयोगों, संगठनों व गैर–सरकारी संगठनों का वर्णन

भी अध्याय में वर्णित है।

चतुर्थ अध्याय हिन्दी दलित कविता एवम् मानवाधिकारों की अभिव्यक्ति के अर्न्तगत हिन्दी कविता की विकास–यात्रा को स्पष्ट करते हुए दलित कविताओं में उभरकर आये दलित समाज की पीड़ा, घुटन, संत्रास व शोषण को दर्शाया गया है। जिसमें दलित कविता का विद्रोही स्वर भी मुखरित हुआ है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत हिन्दी दलित साहित्य की आत्मकथा विधा को मानवाधिकारों के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया गया है। अपने निजी अनुभवों व सम्पूर्ण दलित समाज की समस्याओं को इन आत्मकथाओं में अभिव्यक्त किया गया है।

षष्ठम अध्याय 'हिन्दी दलित कहानियों में अभिव्यक्त मानवाधिकारों के विविध आयाम' से सम्बंधित है। इस अध्याय में दलित कहानी विधा के अन्तर्गत बँधुआ मजदूरी, निर्धनता, अस्पृश्यता, जातिगत हीनताबोध, धार्मिक शोषण, दलित स्त्री का शोषण आदि दलित समाज की विभिन्न समस्याओं को चित्रित किया गया है।

सप्तम अध्याय में हिन्दी दलित साहित्य की अन्य विधाओं उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना व वैचारिक लेखन में मानवाधिकारों के स्वरूप को विश्लेषित किया गया है।

शोध प्रबंध का अन्तिम अध्याय 'उपसंहार' है। जिसके अन्तर्गत विषय समापन करते हुए सभी अध्यायों को समाहार रूप में प्रस्तुत किया गया है। शोध का सार, निष्कर्ष, सीमाएँ व भावी शोध संकेत अध्याय के महत्वपूर्ण अंगों के रूप में चित्रित किए गए है।

शोध–प्रबंध के परिशिष्ट भाग के अन्तर्गत विभिन्न दलित साहित्यकारों के

साक्षात्कारों को शामिल किया गया है। संदर्भ ग्रंथ सूची के अन्तर्गत आधार ग्रन्थ, सहायक–ग्रन्थ, अंग्रेजी–ग्रंथ, शब्दकोश व पत्र–पत्रिकाओं को सूचीबद्ध किया गया है।

प्रस्तुत साहित्यिक शोध प्रबंध के लिए ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक व समीक्षात्मक अध्ययन पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। ऐतिहासिक पद्धति के अन्तर्गत 'दलित' और 'मानवाधिकार' की अवधारणा व स्वरूप को ऐतिहासिक संदर्भों में जाँचते–परखते हुए उनके सभी पहलुओं का विस्तृत वर्णन किया गया है। अध्ययन पद्धति समीक्षात्मक इसलिए है क्योंकि सम्पूर्ण विचारों को वर्तमान संदर्भों में प्रस्तुत किया गया है। इस संदर्भ में विभिन्न विचारकों तथा अध्ययनकर्त्ताओं द्वारा दिए गए विचारों की समीक्षा व मूल्यांकन वांछनीय है।

दलित व गैर–दलित लेखन की तुलनात्मक वैचारिक दृष्टि व दलित साहित्य के साथ मराठी साहित्य की तुलना करते हुए अध्ययन व विश्लेषण के अन्तर्गत तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग हुआ है। सम्पूर्ण शोध प्रबंध की रूपरेखा से लेकर उपसंहार के अध्ययन के अन्तर्गत वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है और दलित साहित्य के संदर्भ में विभिन्न तथ्यों व निष्कर्षों को स्थापित करने का प्रयास किया गया है।